संजय पंजीयर

गुवाहाटी विश्वविद्यालय

समझ लो कि अब तलाश खत्म हुई...

अब सुबह की किरणें तुम्हें बड़ी भाए...

जब गुलाब की पंखुड़ियां तुम्हें अपने करीब बुलाए...

जब बगीचे की हरियाली तुम्हारा मन लुभाए..

जब कड़ी धूप में भी उसकी याद सताए...

जब पल बीते में कई साल लगाए

जब गहरी हो सांसे कि तुम्हारे करीब वो आये...

जब नजरें तीर जैसी टकराये...

जब हुस्न उसका तुम्हारे ख्वाबो में भी आये...

जब रातों को नींद न आये...

सुबह उठते ही उसका ख्याल आये..

जब दिल उसी का होना चाहे...जब हर घर उसकी बात हो जाए...

जब चाय में उसकी मिठास घुल जाए

जब देखो उसे तो बस दिखता ही जाए

जब हर सांस से पहले उसका ही नाम आए

समझ लो के अब तलाश खत्म हुई.....

समर्पण

प्यार की किताबों में,

मैं तुम्हारा नाम लिखूंगा, हर शब्द के साथ,

हमारा जुनून जल रहा है।

अगर तुम कहो, रात हो या दिन,

मैं तुम्हारी इच्छाओं को पूरी करने के लिए

हर व बाधाओं को पार कर जाऊंगा,

तुम्हें अपने ख़यालों से अलग करने की हिम्मत मैं नहीं कर सकता,

क्योंकि तुम्हारे बिना ज़िंदगी के रंग,

फीके पड़ जाएंगे।

यदि आप चुप हो तो शायद मैं जीना बंद कर दूंगा,

लेकिन आपके प्यार में,

मैं केवल दे सकता हूं

मैं केवल दे सकता हूं।